ओ३म्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

आर्य प्रेरणा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)

दूरभाषः 011-25760006 Website - www.aryasamajrajindernagar.org

वर्ष-7 अंक 4, मास मई-जून 2014 विक्रमी संवत् 2071

दयानन्दाब्द 189 सृष्टि संवत् 1960853115, सम्पादक डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

– सत्यार्थ प्रकाश और हम –

आर्य समाज अब क्या करे?

–स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

तनिक विचारें कि शताब्दी समारोह का रुकना कहीं आज का युगधर्म अथवा फैशन तो नहीं बन गया। यह ध्रुव सत्य है कि प्रदर्शन प्रधान इन शताब्दी समारोहों की बाढ़ में गम्भीर चिन्तन या ठोस काम करने की भावना सर्वथा लुप्त होती जा रही है। आए दिन होने वाले इन सभी शताब्दी समारोहों को अखिल भारतीय रूप देने की चेष्टा भी हम कर देते हैं। प्रत्येक समारोह में आर्य-जनता के लाखों नहीं करोड़ों रूपये व्यय हो जाते है। हां! इतना अवश्य है कि भीड़ की दृष्टि से यह समारोह सफल होते हैं। आयोजकों को विपुल धनराशि भी प्राप्त हो जाती है। किन्तु इन सब के बदले आर्य समाज को क्या उपलब्धि हुई- इसे न हम जानते हैं और न हमारे नेता ही बताने में समर्थ हैं। आवश्यकता तो इस बात की है कि वाहवाही से दूर रहकर किसी योजना को तैयार करके उसे व्यावहारिक रूप देकर रचनात्मक कार्य किए जाएं।

अब किसी रूप में सही, सत्यार्थ प्रकाश व्यापक रूप में चर्चा का विषय बना हुआ है। सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार और प्रसार करना भी आवश्यक है किन्तु इससे अधिक आवश्यक है उसमें लिखी बातों की ओर ध्यान देकर उन्हें व्यावहारिक रूप देना। समारोहों में सम्मिलित होने वाले हजारों लोग भले ही सत्यार्थ प्रकाश के नाम से परिचित हो किन्तु उसमें क्या क्या लिखा है अनेकशः लोग अनभिज्ञ हैं। विचारशील लोग सहज में अनुमान लगा सकते हैं कि इतना बड़ा परिश्रम और व्यय केवल भीड़ इकट्ठी कर लेने तक ही समाप्त न हो जाए वरन् कुछ रचनात्मक और ठोस उपलब्धि हो जाए तभी यह समारोह किंचित श्रेयस्कर बन सकेंगे। आर्य समाजी जनता, आर्य समाज के नेताओं विभिन्न सभाओं के अधिकारियों, संसद तथा विधान सभाओं के सदस्यों का कर्तव्य है कि अपनी अपनी सीमाओं में सत्यार्थ प्रकाश की मान्यताओं को व्यावहारिक रूप देने का यत्न करें।

आर्य समाज का कार्यक्रम क्या है?

आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्यसमाजी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। आये दिन मनायी जाने वाली शताब्दी के नाम पर होने वाले बड़े-बड़े जलसों और जलूसों की भीड़ देखकर लगता है कि हम दिग्विजय करने निकल पड़े हैं। विदेशों में होने वाले आर्य सम्मेलनों की बातें पढ़-पढ़ कर लगता है कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न पूरा होने में अब अधिक देर नहीं हैं। परन्तु वास्तविक स्थिति कुछ और है। पहले की अपेक्षा मत-मतान्तरों की संख्या कई गुना बढ़ गई हैं। पहले एक समय में ईश्वर का एक अवतार होता था। अब एक साथ दर्जनों भगवान धरती पर विचरण कर रहे हैं। पहले ईश्वर का आरोप कर मूर्ति की पूजा की जाती थी अब मनुष्यों की मूर्तियों और समाधियों की पूजा होने लगी है। पहले जो काम व्यक्तिशः होते थे वे अब योजनाबद्ध रूप में किये जाने लगे है। धार्मिक अंधविश्वासों को बढ़ावा देने के लिए करोड़ो रूपये खर्च किये जा रहे है। देश के बड़े बड़े नेता अपने अंधविश्वासों का खुला प्रदर्शन कर रहे हैं। जनता का मार्गदर्शन करने और प्रगतिशील होने का दम भरने

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वाले बड़े बड़े अखबार करोड़ों की संख्या में छप कर चमत्कारों और फलित ज्योतिष की सच्चाई में विश्वास बढ़ा रहे हैं। रेडियो और टेलीविज़न के माध्यम से मूर्तिपूजा, रामलीला आदि का धुंआधार प्रचार हो रहा है।

शास्त्रों का कथन है – 'यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः' अर्थात् यत्न करने पर भी यदि सफलता न मिले तो सोचना चाहिए कि प्रयत्न में कहां दोष है? दवा करने पर भी अगर मर्ज बढ़ता जाए तो दवा में दोष हो या चाहे रोग के निदान में– कहीं न कहीं दोष अवश्य हैं। निश्चय ही हमारी प्रचार प्रणाली में दोष आ गया है। विरोधी प्रचार के माध्यम बड़े सशक्त हैं। सिनेमा, रेडियो, अखबार आदि की पहुंच तो प्रतिदिन करोड़ों तक है। बरसों बीत जाने पर भी चेहरे नहीं बदलते–चेहरे भी झुर्रीदार!! वार्षिकोत्सव तक में हमारे सब सदस्य भी शामिल नहीं होते, आर्य समाजेत्तर लोगों की तो बात ही क्या, हमारे कार्यक्रम इस प्रकार निश्चित होने चाहिए कि नित नए लोगों में हमारी बात पहुंच सके। एतदर्थ निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान देना चाहिए।

परिवारिक सत्संगों की योजनाबद्ध व्यवस्था की जाए – जिस सदस्य के यहां सत्संग होना हो, उसे चाहिए कि आग्रहपूर्वक अपने सम्बन्धियों, पड़ोसियों तथा मित्रों को उसी प्रकार आमंत्रित करें जिस प्रकार अपने यहां होने वाले संस्कार आदि के अवसर पर आमंत्रित किया जाता है। जो आर्यसमाजी नहीं है वो भी इस परिवार में होने वाले सत्संग में सम्मिलित होना अपना कर्तव्य समझेंगे। ऐसे सत्संगों में व्यावहारोपयोगी मण्डनात्मक भाषण करना ही उचित होगा। प्रसंगवश सिद्धान्तों की चर्चा की जा सकती है।

साप्ताहिक सत्संगों का कार्यक्रम– ऐसा होना चाहिए कि पारिवारिक सत्संग से प्रेरणा पाकर यदि कोई नया व्यक्ति साप्ताहिक सत्संग में पहुंचे तो वह निराश न हो। समस्त कार्यक्रम पहले से निश्चित हों। यज्ञ, भजन और उपदेश के कार्यक्रम क्रमशः चलता रहे।

वार्षिकोत्सव में 2–3 व्याख्यान खण्डनात्मक अवश्य कराये – मूर्ति पूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, अद्वैतवाद, वेदों का अपौरूषेयत्व, वेदों का इतिहास, राधास्वामी, सांई बाबा, रजनीश आदि के मत–मतान्तरों, सायण आदि की तुलना में महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की श्रेष्ठता आदि विषयों पर भाषण होने चाहिए। आमंत्रित विद्वानों को पहले ही उनके भाषण के विषय में सूचित कर दिया जाए। उत्सव के कार्यक्रम में वक्ताओं के नाम के साथ उनके भाषण का विषय भी लिखा जाय। ऐसे व्याख्यानों का विज्ञापन विशेष रूप से किया जाये।

वर्ष में एक बार किसी विषय पर शास्त्रार्थ का आयोजन किया जाये–

अपने–अपने विद्वान् का उत्साह बढ़ाने के लिए तथा उत्सुकता के कारण शास्त्रार्थ में आर्य समाजेत्तर श्रोता शास्त्रार्थ में सहज ही जा आते हैं। यहां आकर वे हमारी बात सुनेंगे और उनमें से कुछ कुछ लोगों के हृदय में हमारी सच्चाई अंकित होगी।

वेदों के प्रति श्रद्धा – हम समझते थे कि जैसे जैसे लोग वेदों को जानेंगे वैसे वैसे बुद्धिजीवी वर्ग में उनके प्रति श्रद्धा बढ़ेगी। किंतु वस्तुस्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। बौद्धिक स्तर पर सर्वत्र वे व्यक्ति छाये हुए हैं जिन्होंने भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्कृत में एम.ए. करते समय ही वेदों की झलक देखी है। इन्हें पढ़ाने वाले प्राध्यापक स्वयं सायणादि, पौराणिक एवं पूर्वाग्रहों से युक्त पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से प्रभावित हैं। वेदों का जो स्वरूप इन छात्रों के सामने आता है उसे देखने के बाद वेद अपौरूषेय और सब सत्य विद्याओं के ग्रंथ न रहकर साधारण लोगों द्वारा रचित किस्से कहानियों की पुस्तकें रह जाती हैं। इतिहास में एम.ए. करने वाले छात्रों को वैदिक कालीन इतिहास के प्रसंग में भी यही सब कुछ पढ़ाया जाता है। वे पढ़ते हैं कि यहां के आदिवासी कोई और हैं, आर्य लोग तो बाहर से आकर यहां के आदिवासियों को लड़ाइयों में जीतकर यहां बस गए है!! संस्कृत और इतिहास में एम.ए. करने वाले ये छात्र अध्यापक बन कर स्कूलों और कालिजों में अपने छात्रों को वही सब कुछ पढ़ाते हैं, जो वे पढ़कर आये हैं। इस प्रकार शिक्षित वर्ग वेदों के इसी स्वरूप को जानता और मानता है।

इसे देख सुनकर उसके मन में वेद के प्रति विरक्ति एवं घृणा के भाव ही उत्पन्न होते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि– आर्य समाज के एतदर्थ समर्पित उच्चकोटि के विद्वान आर्य समाज के उत्सवादि का मोह छोड़कर विश्वविद्यालयों व कालेजों को अपना केन्द्र बनायें और वहां अध्यापन कार्य में लगे संस्कृत तथा इतिहास विभाग के अध्यापकों से सम्पर्क स्थापित कर वेदों के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण ठीक करें। उनके दिमाग बदले जायें तो कालान्तर में सारा सिलसिला बदल जाएगा।

पौराणिक विद्वानों के साथ मिलकर वेद सम्बन्धी गोष्ठियों का आयोजन किया जाये–जिसमें प्रेमपूर्वक वार्तालाप द्वारा पक्ष–विपक्ष में विचार करके उन्हें अपने पक्ष में लाने का प्रयत्न हो। सार्वजनिक रूप में शास्त्रार्थ के समय 'अहम्' के कारण हठ और दुराग्रह सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में बाधक बन जाते हैं।

हमारी शिक्षण संस्थायें – विदेशी शासन के जमाने में हमारी संस्थायें राष्ट्रवाद की पनौदी का काम देती थीं। उनमें पढ़ने पढ़ाने वालों पर आर्य समाज की छाप होती थी। किन्तु अब उनका कोई उपयोग नजर नहीं आता। हमारे कालेजों, स्कूलों के प्रिंसिपलों

और मुख्याध्यापकों में भी अब शायद ही कोई आर्यसमाजी भावना के व्यक्ति हों। यदि कोई कोई दिखाई भी देते है तो केवल इसलिए और उस दिन तक जब तक वे कुर्सी पर बैठे हैं। उनके अन्दर आर्य समाज कहीं नहीं। संस्था के संचालन का कार्य वे बड़ी कुशलता और तत्परता से करते हैं। किन्तु सिद्धान्त, व्यवहार, आचार-विचार, रहन-सहन आदि की दृष्टि से उनमें और दूसरी संस्थाओं के आचार्यों में कोई विशेष अन्तर नहीं मिलेगा। हमारी शिक्षण संस्थाओं में और दूसरी शिक्षण संस्थाओं में और वह नाममात्र हमें बहुत महंगा पड़ रहा है। आर्य समाजों या प्रान्तीय समाजों में बड़े पैमानों पर होने वाले झगड़ों के मूल में उनके अधीनस्थ गुरुकुल कॉलेज ही मिलेंगे।

आर्यों का राज्य – हम प्राचीन काल में आर्यों के आदर्श एवं चक्रवर्ती राज्य पर गर्व करते हैं और फिर से वे दिन लाने के लिए आर्यसमाज को सामूहिक रूप से राजनीति में घसीटने की बात करते हैं। किन्तु जितनी कुछ सत्ता आर्यों के हाथ में है, उसके सहारे क्या हम ऐसा कुछ करके दिखा पाये हैं? जिससे लोगों को हमारे बारे में औरों से अच्छी राय बनाने का आधार मिल सके। जो अपने सीमित क्षेत्र में स्थानीय आर्यसमाजों, अपने प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक संगठनों और तदधीन संस्थाओं का संचालन नहीं कर पा रहे, और इस निमित्त आपस में सिरफुटौव्वल कर प्रतिदिन अस्पतालों में खड़े रहते हैं, उनके हाथ में शासनतंत्र सौंप कर देश निश्चिन्त हो जायेगा, कौन कैसे विश्वास करेगा? कभी श्री हरविलास शारदा और श्री धनश्याम सिंह गुप्त ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से ऐसे कानून बनवाने में सफलता प्राप्त की थी जो आर्यसमाज के सिद्धान्तों के पोषक थे। आज राजनीति में डूबे हमारे नेता इतना भी नहीं कर पा रहे हैं। राष्ट्र को पवित्र लोगों का नेतृत्व चाहिए) ऐसे लोगों का जिनमें स्वार्थ, पक्षपात, ईष्या-द्वेष, लोभ-लालच का लेश न हों, और जो किसी भी प्रकार के व्यसनों से परे हों। यदि ऐसे पवित्र लोगों का नेतृत्व हम प्रदान कर सकें, तो यही आर्य राज्य के निर्माण के लिए हमारा सब से बड़ा योगदान होगा।

नया खून – आवश्यकता पड़ने पर जब किसी आदमी को खून चढ़ाया जाता है तो इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चढ़ाया जाने वाला खून रोगी के खून का वर्ग का हो, उसकी प्रकृति के अनुकूल हो। विपरीत गुणों वाला खून चढ़ाये जाने पर लाभ के बदले हानि भी हो सकती है। आर्य समाज में नये खून के नाम पर जिन लोगों की भरती की गयी और की जा रही है, वे आर्य समाज के सिद्धान्तों और मान्यताओं से कोसों दूर हैं। उन्हें आर्य समाज में लाने वाले लोग अपनी अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से चुनाव में हाथ खड़ा करने के लिए लाते हैं, और आने वाले भी किन्हीं स्वार्थों से प्रेरित होकर ही आते हैं। आर्यसमाज के नियमोपनियम, विधि विधान, आचार विचार, क्रियाकलाप आदि की उन्हें जानकारी नहीं होती। ऐसे लोगों का मुख्य लक्ष्य राजनीतिक होता है। राजनीति में धर्म आ जाये तो राजनीति पवित्र हो जाती है, किन्तु यदि धर्म चला जाये तो धर्म भ्रष्ट हो जाता है आज आर्य समाज की स्थिति कुछ ऐसी ही है।

आवश्यकता इस बात की है कि-उसके संगठन में प्रमुखता उन लोगों की हो जो विद्वान हों, सात्विक वृत्तिवाले हों, व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक रूप से ईमानदार हो तथा चौबीसों घंटे आर्यसमाज के ही हों।

कृणवन्तो विश्वमार्यम् – हमारे संगठन के निर्माण की प्रक्रिया नीचे से ऊपर को है, ऊपर से नीचे की नहीं। आर्यसमाजों की संख्या भले ही थोड़ी हो, सदस्यों की संख्या भी थोड़ी हो, किन्तु जितने भी हों खरे हो। खोटे सिक्कों से जेब भरी हो तो किस काम की? विधि विधान के अनुसार नीचे से ऊपर तक संगठन का निर्माण हो। वेद का ज्ञान और तदनुकूल आचरण ही हमारी समस्त गतिविधियों का आधार हों।

-साभार आर्य मित्र

गाजर प्राकृतिक ब्लड बैंक है

आयुर्वेदिक मत– मधुर तिक्त रस-लघु तीक्ष्ण स्निग्ध, गुण उष्ण वीर्य एवं मधुर विपाक होती है। यह त्रिदोषशामक है। यह दीपन संग्राही वृस्य ग्रहण होती है, रक्त पित्त संग्रहणी में लाभ करती है।

आधुनिक मत – इसके मूल में कैरोटिन हाईड्रोकैरोटिन शर्करा स्टार्च पैक्टिन मौलिक एसिड, लिगनिन, अलब्युमिन लवण तथा एक उड़नशील तेल पाया जाता है। इसमें आयरन पर्याप्त मात्रा में होता है। गाजर रस से अनेकों लवण और विटामिन ए बी सी डी ई व जी मिलते हैं।

गाजर के सेवन से –

1. शरीर मुलायम और सुन्दर बनता है ।
2. शरीर की त्वचा एवं नेत्र स्वथ्य बने रहते हैं।
3. इसके नियमित सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती है।
4. मानसिक शारीरिक तथा स्नायु शक्ति प्राप्त होती है।
5. बौद्धिक विकास के लिए गाजर लाभदायक है।
6. रोगों के आक्रमण से व्यक्ति सुरक्षित रहता है।
7. शरीर में शक्ति का संचार होता है।
8. गाजर का सेवन सौन्दर्य बढ़ाता है।
9. गहरी नींद आती है पौरुष कमजोरी दूर होती है।
10. गाजर पेट कब्ज को दूर करती है।

-हरिश्चन्द्र आर्य, प्रचार कार्यालय, अमरोहा

ओ३म्

धर्म और मानव

–विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

वेद मंत्र प्रेरणा देते हैं कि मानव को अपना जीवन ऊँचा बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए। यह मानव का धर्म है। धर्म बाहर से धारण नहीं किया जाता यह इन्द्रियों में स्वतः निहित रहता है। चक्षु इन्द्रिय का धर्म है देखना। इससे वह सुन्दर दृश्य देखता है। घ्राणेन्द्रिय का धर्म है सुगन्ध ग्रहण करना। कर्णेन्द्रिय का धर्म है शब्दों को सुनना। अभद्रभाषण से घृणा करना। रसना का धर्म है षड्रसों का स्वाद लेना। त्वचा का धर्म है शीतोष्ण वायु का स्पर्श करना। कर्तव्य का पालन करना मानव धर्म है। ब्रह्मचारी आश्रम में प्रातः होने वाले यज्ञ में आचार्य के पास "समित्पाणिः" अर्थात् समिधा हाथ में लेकर यज्ञशाला में प्रवेश करता है यह उसका कर्तव्यधर्म होता है। अपने कर्तव्यकर्म से उसमें शक्ति उत्पन्न होती है। जीवन में पवित्रता आती है। परोपकार भावना का उदय होता है। उसमें विवेक जागता है। ब्रह्मचारी के समित्पाणि होने से वायुमण्डल पवित्र रहता है, सुगन्धित बनता है। मानव हृदय में विचारों की सुगन्धी का प्रसार होता है। उसकी वैचारिक सुगन्धि के प्रसार से मानव समाज ऐसे सुगन्धित होता है जैसे वनस्पतियों की पुष्पगन्ध से सारा वातावरण सुगन्धित रहता है। वहां कोई रोग उत्पन्न नहीं होता।

एक बार मनुवंश के राजा जालवी से महर्षि गौतम के पिता ने पूछा–भगवन् आप कितनी समिधाओं से यज्ञ करते हैं। महराजा जालवी ने कहा–महर्षि मैं ज्ञान–कर्म उपासना रूपी तीन समिधाओं से यज्ञ करता हूँ। ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य भी मेरी समिधाएं है– मैं इन सबसे भी यज्ञ करता हूँ। इसी से राष्ट्र में कर्तव्य धर्म की उच्चता रहती है। ये समिधाएं मेरे अन्नाधान का कारण हैं, आधार हैं। मेरे हृदय में सत्व–रज–तम भी मेरे अन्नाधान की समिधाएं हैं। इन्हीं से प्रजा को एक समान सुगन्धित रखना मेरा धर्म है।

प्रातःकालीन ब्रह्मचिन्तन करना ब्रह्मयज्ञ कहलाता है। उसी के साथ देवपूजा (हवन करना) और अतिथि सेवा करना प्रत्येक घर की समिधा हैं। इसी से वाह्य तथा अन्तराग्नि प्रदीप्त रहती है। ब्रह्मचिन्तन करने वाले माता पिता की सन्तान बुद्धिमान होती है। देवपूजक का घर सदा सुगन्धित रहता है। उनके हृदय में श्रद्धा बहती है। वह परोपकार की नदी है जिसमें स्नान करना प्रत्येक गृहस्थ का मूलधर्म होता है। वे भिखारी नहीं होते हैं। दान करना उनका महान पवित्र धर्म है। उनके विचारों की सुगन्धी से देव सदा प्रसन्न रहते हैं। अतिवृष्टि अनावृष्टि का नाम वहां सुनने को नहीं मिलता। उनकी आत्मा में इतना बल आ जाता है कि वहां कोई सन्तानहीन नहीं रहता। उनकी सन्तान अल्पायु में शरीर नहीं छोड़ती। साकल्य समिधा–घृत में लगा उनका द्रव्य कभी समाप्त नहीं होता उस घर को वह द्रव्य कभी नहीं छोड़ता। दुरुपयोग (सल्फा, शराब) में लगा द्रव्य उस घर से सदा के लिए दूर चला जाता है फिर वापिस नहीं आता। स्वाहा के साथ अपने दुर्गुणों को यज्ञाग्नि में समर्पित कर देने वाले गृहस्थी यजमान ब्रह्मज्ञानी बन जाते है। उन ईश्वर भक्तों के घर में लक्ष्मी का सदा वास बना रहता है। विद्वान अतिथि सदा उस घर की शोभा बढ़ाते है। वे अतिथि विद्वान उनकी सेवा से प्रसन्न रहते हैं। प्रसन्न हुआ अतिथि वहां अपने पुण्य देकर ही प्रस्थान करता है। उस विद्वान अतिथि की वाणी से वह गृहस्थ पवित्र हो जाता है। उस गृहस्थ की आत्मा ब्रह्म की ओर बहने लगती है।

वह पितृयज्ञ का भी पारखी हो जाता है। पितृ सेवा उसके हृदय की शोभा होती है। देवयज्ञ में लगे विश्वधर्म के ये पुजारी वैदिक राष्ट्रधर्म की मर्यादा से कभी दूर नहीं रहते। ऋषि मुनिधर्म के पुजारी बन अपने जीवन धर्म से समाज के उत्थान में लगे रहते हैं। समाज का वायुमण्डल इनसे पवित्र बना रहता है।

ऐसे मानव कभी धर्मनिरपेक्ष नहीं होते हैं। संसार का कोई राष्ट्र या प्राणी धर्मनिरपेक्ष नहीं है। पशु पक्षी भी धर्म निरपेक्ष नहीं होते। मछलियां धर्म निरपेक्ष हो जायें तो समुद्र के जल को निर्मल कौन करेगा? वृक्ष वनस्पति न हो तो ब्रह्माण्ड का रक्षा कवच कौन देगा? जीवनमात्र की रक्षा कैसे होगी? सर्प, बिच्छू, जंगल में शेर न हो तो ब्रह्माण्ड विष को निगल, आक्सीजन प्राणधारिणी गैस कौन प्राणी उगलेगा? माता धर्मनिरपेक्ष हो जावें तो सन्तान कहां से आएगी? सृष्टिक्रम को कौन जीवित रखेगा? सूर्यधर्मनिरपेक्ष हो जावे तो ऊर्जा कहां से मिलेगी? अधर में लटके ग्रहों को अपने आकर्षण में कौन ठहराये रखेगा? चन्द्रमा धर्म निरपेक्ष हो जावे तो अमृत कहां से मिलेगा? वायु धर्म निरपेक्ष हो जावे तो शब्दवाणी कहां से मिलेगी? पृथ्वी धर्मनिरपेक्ष हो जावे तो सृष्टि को कौन धारण करेगा? अन्न कहां से मिलेगा? जल धर्मनिरपेक्ष हो जावे तो जीवन रस कहां से मिलेगा? प्रलयकाल में सृष्टि को कौन धारण करेगा? मातृगर्भ में शिशु का ओढन व बिछौना तथा पाशा बन कौन उसकी रक्षा करेगा? धर्म निरपेक्ष राजनीति अन्धी होती है। लंगड़ी होती है। मूर्ख होती है। धर्मनिरपेक्ष प्राणी अंधा, नास्तिक होता है, जंगली और गुलाम होता है, कायर रहता है नपुंसक रहता है, भिखारी रहता है। बुद्धिमान धार्मिक दूसरों को धर्मनिरपेक्षता रूपी भिखारिन की चादर उढ़ाकर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। तथा अपने आपको धर्मनिरपेक्ष नहीं करते, वे धर्म निरपेक्ष होते भी नहीं है। स्वतंत्रता भी धर्मनिरपेक्ष नहीं होती, गुलामी धर्मनिरपेक्ष होती है।

आप स्वाभिमानी होना चाहते हैं, आत्मनिर्भर रहना चाहते हैं तो धर्म मर्यादा का मार्ग पकड़ो, भारतवीर बनो। पटेल, दयानन्द, सुभाष, झांसी की रानी के समान धर्म पर आरूढ़ रहो–अन्यथा तुम्हारे समान तुम्हारी संतान भी सदा गुलामों का जीवन बसर करेगी।

मालदाबाग पुरानी गुडमण्डी, शाहपुर,
मुजफ्फरनगर

"महर्षेःदयानन्दस्य संस्तुतिः"

1. टंकारा ग्राम-बासाय, अमृतकर्षन-सुताय च।
स्वामिने सरस्वत्यै, दयानन्दाय ते नमः।।

अर्थ - टंकारा (राजकोट, गुजरात) ग्राम में निवास करने वाले, पूज्य पिता अमृत कर्षन जी के सुपुत्र स्वामी दयानन्द सरस्वती को सादर प्रणाम है।

2. मूलशंकरबालाय, शुद्ध चैतन्यव्रताय च।
ब्राह्मणकुल-जाताय, दयानन्दाय ते नमः।।

अर्थ- मूलशंकर बालक के लिए, शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी (ब्रह्मचर्य अवस्था) का नाम ब्राह्मण कुलोत्पन्न महर्षि दयानन्द को मेरा सादर नमन है।

3. सत्यं शिवं च बोधाय, संकल्पगृह-त्यागाय।
शिवसंकल्प-पूर्णाय, दयानन्दाय ते नमः।।

अर्थ - सत्य और शिव के (सत्यस्वरूप के) बोध के लिए, संकल्प के साथ गृह परित्याग करने वाले और शिवसंकल्प को पूर्ण करने वाले मनस्वी देव दयानन्द को मेरा सादर नमन है।

4. पूर्णानन्दः गुरुर्यस्य, सन्यासव्रत-धारिणे।
यथार्थनाम बोधाय, दयानन्दाय ते नमः।।

अर्थ - जिसके पूर्णानन्द सरस्वती गुरु (सन्यासदीक्षा के गुरु) सन्यास का व्रतधारण करने वाले और अपने नाम के (दया और आनन्द इन दोनों गुणों का) यथार्थ बोध करने वाले ऋषिवर देव दयानन्द को श्रद्धा सहित नमः है।

5. प्रज्ञाचक्षः गुरुर्यस्य, विरजानन्द नामकः
भस्करो वेदविद्यायाः, तस्मै श्रीमुखे नमः।।

अर्थ - बुद्धि ही है नेत्र, ऐसे विद्यादाता गुरु विरजानन्द जी वेदविद्या के सूर्य हैं। उन श्री गुरु के (चरणारविन्दों में) मेरा नमन है।

6. विरजानन्द-नेत्राय, शिव्याय व्रतधारिणे।
आर्षविद्या-प्रसाराय, दयानन्दाय ते नमः।।

अर्थ- अपने गुरु विरजानन्द जी के नेत्र (गुरु के संकल्प को साकार करने वालें, शिव्य, आर्ष विद्या के प्रसार, हेतु व्रतधारण करने वाले दयानन्द के लिए मेरा नमन है।

7. स्वतंत्रमंत्र-घोषाय, देशोद्धास्थरिणे।
राष्ट्रसंकल्प-करणाय, दयानन्दाय ते नमः।।

भावार्थ - स्वतंत्रता के मंत्र की उद्घोषणा करने वाले, देश के उद्धार (उत्थान) और राष्ट्र की एकता का संकल्प करने वाले (राष्ट्रप्रेमी, राष्ट्रसन्त, राष्ट्रपुरुष राष्ट्रवादी, राष्ट्रनेता) महामानव दयानन्द के लिए मेरा सादर प्रणाम है।

8. संताप-दुःख नाशाय, देशार्थ-प्राणहोमिने।
सर्वस्व-त्यागिने तस्मै, दयानन्दाय ते नमः।।

भावार्थ - जनमानस के संताप और दुःखों का विनाश करने वाले, देशहित (राष्ट्रयज्ञ में) अपने प्राणों की आहुति देने वाले, सर्वस्व त्याग करने वाले उस त्यागमूर्ति दयानन्द को मेरा प्रणाम है।

9. वेदज्ञान-प्रकाशाय, सत्यार्थ-प्रवर्तकाय च।
पञ्चयज्ञ-प्रचाराय, दयानन्दाय ते नमः।।

भावार्थ - वेदों के पावन ज्ञान का प्रकाश करने वाले, सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा (सत्यसिद्धान्त) का प्रवर्तनवाले, पञ्चयज्ञों का प्रचार करने वाले यज्ञप्रेमी दयानन्द के लिए मेरा सादर प्रणाम है।

10. एकेश्वर-पूजनाय, 'ओं' नाद-घोषणाय च।
संस्कार-मंत्र ज्ञानाय, दयानन्दाय ते नमः।।

भावार्थ - एक ईश्वर की आराधना, और नाद की घोषणा और 16 संस्कार के मंत्रों का विधान करने वाले (मानव प्रेमी, जन जन हित-चिन्तक) महापुरुष देव दयानन्द को मेरा सादर नमन है।

11. वेदधर्म-प्रचाराय, आर्यसमाज-कारिणे।
आत्मज्ञान-बोधनाय, दयानन्दाय ते नमः।।

भावार्थ- वैदिकधर्म के प्रचार और आत्मज्ञान के बोध के लिए आर्य समाज की स्थापना करने वाले (सत्य सनातन वैदिक धर्म के संस्थापक) महायोगी महापुरुष देव दयानन्द को मेरा सादर नमन है।

-प्रस्तुति : आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा
मो. 9871020844

मनुर्भव का सन्देश

मानव का चोला पा कर,
दानवता का काम न कर।
अन्त समय पछतायेगा,
यौवन को बरबाद न कर।।

सद्ज्ञान प्राप्त करने के लिए,
वैदिक सत्संग में जाया कर।
आत्म-कल्याण की दृष्टि से,
ईश्वर के गुण गाया कर।।

मांस मछली अण्डे खाकर,
मत पेट को कब्रिस्तान बना।
यदि स्वस्थ नीरोग रहना चाहे,
तब शुद्ध आहार विहार बना।।

गर जीना है सौ वर्ष तुम्हें,
अपने खान-पान का ध्यान रखो।
क्या खाना है, क्या नहीं खाना,
इसका सदा ही ख्याल रखो।।

धूम्रपान तथा मद्यपान से,
वातावरण को मत दूषित कर।
अन्यथा साफ करेगा तू ही,
सांप और सूअर बनकर।।

मानव उसको कहा जाता है,
जो खाते हैं जीने के लिए।
दानव उसको कह सकते हैं,
जो जीते हैं खाने के लिए।।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का 62वाँ वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया।

आर्य समाज राजेन्द्रनगर नई दिल्ली का 62 वाँ वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेदीय बृहद्यज्ञ का कार्यक्रम दिनांक 21 अप्रैल से 27 अप्रैल तक बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन सायं 7 से 9 बजे तक वेदप्रचार का विशेष प्रकार का कार्यक्रम हुआ, जिसमें अंकित शास्त्री जी के सुमधुर भजनों के पश्चात् डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी के हृदयग्राही उपदेश हुए।

प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ के कार्यक्रम में आर्य जनता ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, इससे पूर्व दिनांक 19 अप्रैल को आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ, इसमें दिल्ली प्रदेश की आर्य समाजों से अनेक आर्यमहिलायें उपस्थित थीं दिनांक 20 अप्रैल को बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हर्षाल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें विभिन्न स्कूलों के 400 विद्यार्थियों ने भाग लिया 27 अप्रैल प्रातः यज्ञपूर्णाहुति के बाद आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका विषय था, "धर्म संस्कृति एवं मानव निर्माण" अनेक वैदिक विद्वानों ने इसमें अपने विचार रखे, जिनमें से प्रमुख थे, आचार्य गवेन्द्र जी, आचार्य चन्द्र शेखर जी, डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री आदि। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. शिवदत्त पाण्डेय जी ने की, समाज के यशस्वी प्रधान एवं सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री अशोक सहगल जी ने विभिन्न समाजसेवियों को आर्य रत्न की उपाधि देकर सम्मानित किया।

दिनांक 20 अप्रैल को सम्पन्न हुए बाल सम्मेलन के सफल प्रतिभाशाली छात्र व छात्राओं को विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन आर्यसमाज के कर्मठ मंत्री श्री सतीश चन्द मैहता जी ने किया। श्री ओमप्रकाश खत्री एवं श्रीमती सुरीला खत्री द्वारा आयोजित ऋषि लंगर के साथ कर्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ध्वजारोहण करते समाज के पदाधिकारी एवं विद्दगण।

ध्वजारोहण करतीं माता उमा बजाज जी एवं समाज की अन्य महिलायें।

मंच पर आसीन सभी विद्दगण।

श्री सुभाष गोयल जी अपने विचार प्रगट करते हुए।

अशोक मनोचा जी एवं उनकी धर्मपत्नी का स्वागत करते, समाज के यशस्वी प्रधान माननीय अशोक सहगल जी एवं महिला आश्रम की प्रधाना आदर्श सहगल जी।

मोतीलाल जी (बीकानेर वाले) का सम्मान करते समाज के प्रधान माननीय अशोक सहगल जी एवं मंत्री सतीश मैहता जी।

सुभाष गोयल जी का सम्मान करती हुई माता उमा बजाज जी।

मंत्री जी की पोती एष्णा मोहिता आशीर्वाद प्रदान करतीं, माता आर्दश सहगल जी।

आर्य कन्या गुरुकुल की छात्राओं को पारितोषिक वितरण करते समाज के मंत्री जी तथा अमृत आर्या जी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों को पारितोषिक प्रदान करतीं माता आदर्श सहगल जी एवं श्रीमती जगदीश वधवा जी।

देश शक्तिशाली कब बनता है

-टीकाराम आर्य

चिन्तनीय मननीय एवं ग्रहणीय –

भद्रमिच्छन्त ऋषय स्वर्विदस्तयो
दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्य जातं तदस्मै
देवा उप संनमनतु।।

शब्दार्थ – स्वर्विद–सुख शान्ति को जानने और प्राप्त करने वाले ऋषय–ऋषियों ने, अग्र–सर्वप्रथम, तप–सुख–दुखादि सहन करने की क्षमता, दीक्षाम–नियम व्रतादि को, उपनिषेदु–ग्रहण किया, ततः–उस तप और दीक्षा के आचरण से, राष्ट्रम–राष्ट्रीय भावना, बलम–बल, ओजश्च–ओज, जातम्–उत्पन्न हुआ, तत–इसलिए अस्मै–इस राष्ट्र के सम्मुख, देवा–देव भी, उपसंनमन्तु–झुके अर्थात् उचित रूप से सत्कार करें।

प्रस्तुत मंत्र में मात्र एक ही विचार प्रस्तुत किया गया है कि राष्ट्र को पूर्ण रूप से शक्तिशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि देशवासी बनाने के लिए आवश्यक है कि देशवासी तपस्वी और दीक्षित बने इन मुख्य गुणों के आचरण से देश शक्तिशाली व स्वाभिमानी बन जायेगा। और अन्य सम्पन्न देश हमारी शक्ति को देखकर झुकेंगे, तथा हमारा सम्मान करेंगे।

बड़े संघर्ष त्याग, तप और बलिदानों के पश्चात् लगभग एक हजार वर्षो बाद 15 अगस्त 1947 को आर्यावर्त स्वतन्त्र हुआ। कुछ लोग कहते हैं कि –

साबरमती के संत
तूने कर दिया कमाल
दे दी हमें आजादी
बिना खड्ग बिना ढाल।

यह कहना उचित नहीं है कि मात्र महात्मा गांधी जी ने बिन लड़ाई झगड़े के स्वतंत्रता दिला दी हो। इस स्वतंत्रता की वेदी पर अनेकों युवकों के बलिदान होने के पश्चात हम स्वाधीन हुए हैं। यह स्पष्ट है कि 5 मई 1857 के मंगल पाण्डे के बलिदान से लेकर 30 जनवरी 1948 के महात्मा गांधी के बलिदान तक इतनी लम्बी सूची है कि उसे देखते हुए यह उचित रूप से कहा जा सकता है कि इन स्वाधीनता के दीवानों ने अपने गर्म खून से दासता की अन्धकार पूर्ण रात्रि को प्रातःकाल के रूप में परिवर्तन किया तब जाकर कहीं 15 अगस्त 1947 को भारतवर्ष पूर्ण रूप से स्वतंत्र हुआ।

किस किस प्रकार के महत्वपूर्ण बलिदान स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हुए, इस संदर्भ में थोड़ा सा वर्णन करना उचित है।

कलकत्ते के स्थान पर दिल्ली को जिस समय राजधानी बनाने के लिए अंग्रेज सरकार के निर्णय को मूर्त रूप देने के लिए वायसराय लार्ड होर्डिंग की दिल्ली के चांदनी चौक में हाथी पर सवारी निकल रही थी दर्शकों की अत्याधिक भीड़ थी लोग मकानों की छतों पर दर्शनार्थ खड़े थे तथा पुष्पों की वर्षा हो रही थी उसी समय किसी अज्ञात क्रांतिकारी ने हाथी पर बम फेंक दिया। बम से वायसराय का अंगरक्षक मर गया और वायसराय मूर्छित हो गये। जुलूस में भगदड़ मच गयी। पुलिस ने चांदनी चौक को चारों ओर से घेर कर अपराधी की तलाश शुरु कर दी, पूरा यत्न करने पर भी अपराधी का पता नहीं चला।

उस के पश्चात् खुफिया पुलिस ने शक के आधार पर 113 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। उन में परमानन्द के सहोदर भाई बाल मुकुन्द भी थे। बाल मुकुन्द जी का विवाह तो हो चुका था पर गौना नहीं हुआ था। बाल मुकुन्द की पत्नी का नाम रामरखी था। बाल मुकुन्द को दिल्ली जेल में बन्द कर दिया गया।

जिस समय बाल मुकुन्द जेल में बन्द थे उनकी पत्नी रामरखी अपने परिवार वालों के साथ जेल में बन्द अपने पति को देखने आई। उस समय विवाह के पश्चात् यह पहला अवसर बाल मुकुन्द के दर्शन का था। गर्मियों के दिन थे जेल की कोठरी अत्यन्त तंग घुटन भरी अन्धकार पूर्ण थी। रामरखी ने आंखों में आंसू भर नयनों से पति को नमस्ते कर पूछा–रात को सोने के लिए क्या कहीं और स्थान पर ले जाते है। बाल मुकुन्द ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया–कैदी हूँ कोई शाही मेहमान तो नहीं कि जिस की सुख सुविधा के लिए दिन में कहीं और रात में कहीं और विश्राम का प्रबंध किया जाये। रामरखी ने थोड़ी देर बाद पूछा–कि खाने को क्या देते हैं। बाल मुकुन्द की जेब में जेल की आधी रोटी पड़ी थी उस रोटी को रामरखी की ओर बढ़ाते हुए कहा–मात्र एक समय में इस प्रकार की दो रोटी दी जाती हैं। रामरखी ने यह रोटी अपने दुपट्टे के कोने में बांध ली।

दिल्ली से लौट कर रामरखी अपनी ससुराल भल्ला कटियाला (जिला जेहलम) गई और अपनी ससुराल के सबसे तंग मकान की कोठरी में घास फूस बिछाकर तथा उसी प्रकार की दो रोटी खाकर निर्वाह करने लगी, अपनी रोटी में राख भी मिला लेती थी क्योंकि जेल की रोटी में राख मिली होती थी। जब तक बाल मुकुन्द पर मुकदमा वाद चलता रहा। रामरखी उसी तपश्चर्या पूर्ण स्थिति में भगवान का भजन करती रही। अन्त में वाद का निर्णय हुआ और बाल मुकुन्द को फांसी पर लटका दिया गया।

यह हृदय विदारक समाचार भल्ला कटियाला भी पहुंचा। रामरखी ने अन्न जल त्याग दिया और ग्यारह दिन तक पति वियोग सहन करते हुए प्रभु भजन करती रही और अंत में अपने पति को सम्बोधित करते हुए कहा–आज आप को संसार से गये हुए ग्यारह दिन व्यतीत हो गये हैं इससे अधिक आप के वियोग को सहन नहीं कर सकती। यह कहते हुए एक लम्बे सांस के साथ उसने अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। तप और दीक्षा की भट्ठी में तपे हुए ऐसे व्यक्तियों के बलिदान से स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

ऐसे एक दो नहीं हजारों बलिदानों के बाद स्वतंत्रता हमें मिली है। प्रसंगवश

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के जीवन की घटना का उल्लेख करना भी यहां अत्यन्त आवश्यक है –

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को भारत से निकाल कर माण्डले की जेल में बन्द कर दिया गया। तभी उन की पत्नी सत्यभामा की 55 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी यह समाचार भारत से माण्डले की जेल में तिलक जी के पास जेलर के माध्यम से भेजा गया। माण्डले जेल का जेलर तिलक जी के आचार व्यवहार एवं विद्वता से अत्यधिक प्रभावित था और उन का भक्त बन गया था, इसलिए वह उन की पत्नी की मृत्यु सूचना को स्वयं लेकर तिलक जी के पास गया।

जेलर जब मृत्यु सूचना का कागज हाथ में लेकर उनके कमरे में पहुँचा तो तिलक जी अपने ग्रंथ को लिखने में संलग्न थे। जेलर ने तिलक को नमस्ते करने के बाद वह समाचार पत्र उन के सामने रख दिया। तिलक जी ने उसे पढ़ा और उल्टा कर के सामने रखी पुस्तक पर रख दिया। जेलर ने कहा–आपने इस पत्र को पढ़ लिया। तिलक ने शान्त भाव से कहा हाँ मैने पढ़ लिया। जेलर ने पुनः कहा इसमें आपकी पत्नी की मृत्यु का दुखद समाचार है। उन्होंने कहा हां यही बात है। जेलर ने फिर कहा – मैंने अपने जीवन में आप जैसा कठोर व्यक्ति नहीं देखा जिसकी आंखों से अपनी पत्नी के मरने पर दो आंसू भी न गिरे। जेलर के शब्दों ने तिलक को झकझोर दिया और कहा– जेलर महोदय मैं अन्य गृहस्थियों के समान अपनी पत्नी से प्यार रखता था। इस संसार में उन की विदाई मेरे लिए अति दारूण और दुखदायी है, किंतु उस के इस वियोग के अवसर पर आंसुओं का न गिरना हृदय की कठोरता नहीं है अपितु जेलर वास्तव में बात यह है कि मेरी आंखों में जितने आंसू थे उन्हें मैं भारत माता की दुखद अवस्था पर बहा चुका हूँ। अब मेरी आंखों में कोई आंसू न रहा जो मेरी पत्नी के मरने पर निकलकर बाहर आता।

तिलक के हृदय का चित्र खींचना हो तो एक उर्दू के कविद्वारा कहा जा सकता है –

गम हो तो हद सवा या अश्क अश्रुवर्षा न हो

उस से पूछो जिसका घर जलता हो और पानी न हो

राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाकउल्ला खां, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, खुदीराम बोस, 56 दिन लाहौर जेल में भूखा रहकर यतीन्द्र नाथ दास 13 सितम्बर 1929 को शहीद हुए। मदन लाल ढींगरा, सुभाष चन्द्र बोस आदि अन्य कितने ही मूल्यवान जीवन स्वाधीनता संग्राम में शहीद हुए।

किंतु हमारा दुर्भाग्य है कि जब चारों ओर स्वार्थता, भ्रष्टाचार का नग्न नाच हो रहा है। युवक –युवतियां अनुशासनहीन और बेनकेल के ऊँट है। लूटपाट और डाकाजनी की आंधियां चल रही है। देश व मानव समाज की यह दुर्दशा विचारशील मनुष्य के मन में अत्यधिक वेदना उत्पन्न करती है।

मान्य पाठकवृन्द अथर्ववेद के उपरोक्त मंत्र में देश को शक्तिशाली बनाने के लिए विशेष साधनों का समावेश किया गया है। यदि वेद के परामर्श अनुसार हम देशवासी तप त्याग के विचारों को जागृत कर सके तो यह मातृभूमि की बहुत बड़ी सेवा होगी।

तप त्याग और दीक्षा का यह लाभ होगा कि राष्ट्रवासियों में राष्ट्र के प्रति पवित्र भावना जाग्रत होगी और राष्ट्र शक्तिशाली बन जायेगा। राष्ट्र को शक्तिशाली और सम्मानित करने के लिए दूसरा कोई मार्ग नहीं है। इसके लिए परम आवश्यक है कि देश के वातावरण और शिक्षा को तप और दीक्षा के पवित्र मार्ग की ओर मोड़ा जाये।

युग पुरुष स्वामी दयानन्द कौन थे?

– कन्हैयालाल आर्य

"मैं सादर प्रणाम करता हूँ? उस महागुरु दयानन्द को, जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत की आत्म गाथा में सत्य और एकता का बीज देखा। जिसकी प्रतिभा ने भारतीय जीवन के विविध अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिसका उद्देश्य इस देश को अविद्या, अकर्मण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व विषयक अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता के जागृति लोक में लाना था। उस गुरु को मेरा बारम्बार प्रणाम है।" ये ज्वलन्त शब्द विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा अभिव्यक्त अपने एक ऋषि कल्प युग पुरुष के प्रति अर्पित नवीन भारत की श्रद्धांजलि के प्रतीक हैं।

वास्तव में महर्षि दयानन्द हमारी आत्मा के बन्धनों को काटने आये थे। महर्षि दयानन्द का हमारे इतिहास में एक अद्वितीय स्थान है। उन्होंने हिन्दू धर्म को मध्य युग की धार्मिक कूपमण्डूकता और पुरोहित तन्त्र के चंगुल से छुटकारा दिलाने का सबसे सबल प्रयास किया था। अन्ध विश्वास, महन्त, मठाधीश एवं पण्डे पुजारी के जंजाल में उलझे हुए भारतीय समाज को एक नया प्रकाश देकर, उन्होंने उसे अपने पैरों पर खड़ा करने का सबल प्रयास किया था।

जैसे चमकने वालों में सूर्य, हाथियों में ऐरावत, भौतिक पदार्थों मे रत्न वीरों में जामदग्न्य, आदर्श पुरुषों में राम, नीतिज्ञों में चाणक्य, योगेश्वरों में कृष्ण तथा शीतल तत्वों में चन्द्रमा को निराला माना जाता है। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द भी एक निराला व्यक्ति है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवन काल में सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके तत्कालीन समाज की स्थिति को देखा तो पाया कि लोग बहुदेवतावाद, जड़ पूजा,

छुआछूत, बाल-विवाह, सतीप्रथा, फलित ज्योतिष, जादू टोना, पशु बलि, मद्य, मांसाहार आदि अनेक प्रकार की कुरीतियों से ग्रस्त हैं। ईश्वर के नाम पर अनेकों स्वयंभू ईश्वर बनकर जनता को पतन की ओर ले जा रहे थे। भारतीय समाज की जीवन परम्परा ईश्वरोक्त वैदिक धर्म से लगभग भिन्न हो चुकी है। लोग वेद, दर्शन, उपनिषद आदि आर्ष ग्रन्थों में वर्णित सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, निराकर ईश्वर से भिन्न कपोल कल्पित मिथ्या देवी, देवताओं की पूजा कर रहे हैं। स्त्री जाति पर भारी अत्याचार हो रहे हैं। स्त्री और शूद्र को वेद बढ़ने का कोई अधिकार नहीं है। नारी ही नरक का द्वार है ऐसी अवैदिक मान्यताओं को समाज में प्रचारित कर समाज को पीड़ित किया हुआ है। बाल विवाह, बहु विवाह एवं विधवाओं पर अत्याचारों से समाज में हाहाकार मच रहा था।

ऐसे अन्धकार के समय परमेश्वर की अपार कृपा से युग पुरुष ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने अवैदिक मिथ्या मान्यताओं के प्रचलन से समाज और राष्ट्र में होने वाली अनेक प्रकार की हानियों तथा कुपरिणामों को देखकर समाज में पुनः विशुद्ध वैदिक मान्यताओं की स्थापना करने का मन में दृढ़ संकल्प किया। विश्व को ईश्वर के सत्य स्वरूप का दिग्दर्शन कराया ओर उद्घोष किया कि एक ईश्वर के पुत्र होने के नाते हम सब भाई है। महर्षि का स्वप्न था कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दुःख और अशान्ति से छूट कर सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त करें। मानव को मानव से अलग करने वाली साम्प्रदायिक दीवारों को वे समाप्त करना चाहते थे।

मेरा प्यारा दयानन्द सब बातों में निराला था। गुरु बना, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, लाजपराय तथा श्याम कृष्ण वर्मा जैसे अनूठे शिष्य उत्पन्न किए। जिन्होंने राष्ट्र और समाज की अनथक सेवा की। शिष्य बने और ऐसे समर्पित कि गुरु को कहना पड़ा "दयानन्द! मुझे आप का जीवन चाहिए। राष्ट्र एवं समाज हित में तुम्हारे जीवन की आहुति चाहता हूँ।" गुरु ने इस पवित्र वाक्य को जीवन का आदर्श मानकर आजीवन निभाया। गुरुडम् नहीं चलाया। सन्तत्व में, त्याग में, तपस्या में, वैराग्य में, योगियों में, समाज सुधारकों में, वेद भाष्यकारों में, ब्रह्मचारियों में, युग प्रवर्तकाओं में, जीने वालों में आप का निरालापन समाज को प्रेरणा देता रहा है।

महर्षि दयानन्द के उपकारों को गिना तो नहीं जा सकता। परन्तु उनके मुख्य कार्यों में ईश्वर के सच्चे स्वरूप की स्थापना, यज्ञ प्रणाली को पुर्नस्थापित करना, वेद प्रचार, स्वराज्य के पुनरूद्धारक, गोरक्षक, अछूतों के सच्चे सुधारक, हिन्दी भाषा के सच्चे हितैषी, अनाथों के रक्षक एवं सार्वभौमिक धर्म के प्रचारक के रूप में आपके योगदान को पूरा विश्व जानता है। परन्तु स्त्री जाति के प्रति आपके किए गए उपकारों को भुलाना तो कृतघ्नता होगी। महर्षि के प्रचार कार्य से पूर्व स्त्री जाति को पांव की जूती माना जाता था। यदि वह विधवा हो जाती थी उसे आयुपर्यन्त ठण्डे सांस भर के जीवन व्यतीत करना पड़ता था। "ढोल, गंवार, शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी कह कर नारी को अपमानित किया जाता था। ऋषि दयानन्द जी ने महर्षि मनु के कथनानुसार "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता," जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं कि घोषणा करके नारी जाति पर बड़े उपकार किए। कन्याओं की छोटी आयु में विवाह कर दिये जाते थे। बूढ़ों के साथ विवाह कर उन्हें विधवा बनाकर समाज में अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश किया जाता था। बाल विवाह का विरोध कर युवावस्था में विवाह का प्रचार किया। कन्याओं की शिक्षा पर बल दिया, उन्हें घूंघट एवं पर्दे से बाहर निकाला। आज ईश्वर कृपा से नारियाँ मजिस्ट्रेट, डाक्टर, वकील, अध्यापिका, प्रशासनिक अधिकारी, मन्त्री, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति तक बन रही है। स्वामी जी के उपकारों को स्त्री जाति कभी भी नहीं भुला सकती।

आज केवल भारत नहीं, सारे धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक संसार पर महर्षि दयानन्द का सिक्का है। विभिन्न मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल दिये है। धर्मपुस्तकों के अर्थों का संशोधन किया है। दलितोद्धार का प्राण, समाज सुधार की जान, आदर्श सुधारक शिक्षा प्रचारक, वैदिक मान्यताओं का पुर्नस्थापक, स्त्री जाति का सच्चा हितैषी, गौमाता का सच्चा रक्षक, करूणा निधि दयानन्द के जीवन से हम प्रेरणा लें।

आओ! हम अपने आपको ऋषि दयानन्द के रंग में रंगे। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो हमारी प्रत्येक चेष्ठा ऋषि की चेष्ठा हो तभी हम एक स्वर से पुकार सकेगें।

पापों और पाखण्डों से ऋषिराज
छुड़ाया था तूने।
भयभीत निराक्षित जाति को निर्भीक
बनाया था तूने।
बलिदान तेरा था अद्वितीय हो गई
दिशायें गुञ्जित थीं।
जन जन को दे गया प्रकाश वह दीप
जलाया था तूने।

अन्त में यह निवेदन करना चाहता हूँ आर्यो! उठो! जागो! अपने को सम्भालो। अपने स्वरूप को देखो। जिन उद्देश्यों के लिए ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज रूपी पवित्र संगठन को खड़ा किया था, उनकी पूर्ति के लिए व्रती तथा संकल्पी बनो। संसार हमारी ओर देख रहा है। वैचारिक चिन्तन आर्य समाज की सबसे बड़ी सम्पदा है। हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं कि हमें ऋषि दयानन्द जैसा पुण्यात्मा, प्रभुभक्त, सत्यज्ञान का प्रेरक मार्गदर्शक मिला है।

- 4/45, शिवाजी नगर,
गुड़गांव, हरियाणा
मो. 09911197073

THE VEDIC LIGHT

(Swami Vidyanand Sarswati ji)

SUBJECT MATTER OF THE VEDAS

All that can form the subject of human mind can be traced to the Vedas. Broadly speaking, the subject matter of the Vedas falls into four categories; that is, they treat of four classes of subjects : (i) Vijnana (Mataphysics), (ii) Karma (action in general), Upasana (communion with god), (iv) Jnana in general. Of these, the first vijnana, takes precedence over others.

1. **Vijnana** or metaphysics means realization of all things-from the almighty God to the tiny blade of grass. Indian philospophy and metaphysical studies deal with this subject. He, being the highest of all entities, the Vedas chiefly treat of Him.

All human energy has a physical basis. The mistake made by Europeon materialism is to suppose the basis to be every thing and confuse it with the source. The source of life and energy is not material but spiritual, while the basis, the foundation on which they stand and work, is physical. All infinite energy (Prakriti – primordial matter) pervades the phenomenal world and, directed by God, forms itself into various names and forms. The clog, the plant, the insect, the animal are in their physical existence merely transformation of this energy. Man may not realise the truth of this fundamental reality as long as his view is self-centred. But a time comes when his eyes open to a new sight and he sees revealed before him a mystery which fills him with and humility. We must realise that we are more than animals. We are mental, spiritual and social beings well. We do not stand by ourselves, but form part of a universal whole.

The Vedas are the pristine springs of Vedic metaphysics. They are the earliest extant religious today and form the cornerstone of all schools of Indian philosophy. The authority of the Vedas in respect of matters stated therein is considered direct and final. Since man is imperfect, human deliverances, however exalted they may be, can hardly be accepted as final and infallible. Therefore on questions regarding transcendental facts, a self-manifest inherently valid, eternally existing and divinely inspired Veda alone can be considered infallible and conclusively authoritative. The role of the revealed scripture, transmitted from beginninggless antiquity lies beyond the sphere of perception and inference. The continuous unfoldment of the predominantly religious and spiritual culture of India for millenniums, governing the thought and conduct of the entire people and drawing them ever to the realisation of the highest value of life attests to the greatness and penetrative influence of the Vedas.

2-Karma-means all sorts of actions or activities, physical or mental, with or without a desire for reward. The Vedas teach all these and explain in short all aspects or needs of human conduct which may be helpful in making human life cultured and sublime. Celibacy, education, relation between man and man, teacher and taught, married life and social order, discipline, governance of the country, charity and benevolence, health science of medicine, artificial rain etc. – all have been dealt with in the Vedas. The Vedas tell us about the attainment of all the four objects of life- (i) Dharma (righteousness), (ii) Artha (wealth and prosperity), (iii) Kama (fulfilment of desires) and (iv) Moksha (Salvation).

3.Upasana – Communion with the almighty father through the eight-fold observance of yoga.

4.Jnana – According to the Chhandogya Upanishad, Vedic study comprises natural sciences, physics, chemistry, science of numbers, chronology, sciency of logic, science of polity, grammar, etymology, sciences cognate to the Vedas **(वेदांग)**, botany, zoology, anthropology, fine arts, science of war, science of spirituality etc. Wheeler Willox, an eminent American scholar, admitting the existence of sciences in the Vedas, remarked, "We have all heard and read about the ancient religion of India. It is the land of the great Vedas, the most remarkable works, containing, not only religious ideas for a perfect life, but also facts which all the sciences have since proved true. Electrons, Radium, airships all seem to be known to the seers who found the Vedas."

Copernicus (1473) and Galilio (1564) established that the earth is revolving and made their theory known to the world. The fact is clearly enunciated in the Yajurveda 40.1 where the universe is described as Jagat. This refers to something which is constantly moving. It was referred to by Dayananda Sarasweti and has since been elaborated in the author's Bhumika, Vol.II, p. 403-2.

Newton has been hailed as the formulator of the theory of the gravitation of earth. This too was established by Dayananda Saraswti in 1875. This had been enunciated by the author in his Bhumika Bhaskara, Vol.II p. 411-14

The principle of the circulation of blood by the heart was first made known in Europe in 1578. But the Brihadaranyaka Upanishad told us

thousands of years ago why the heart is called 'hridaya' (हृदय). It has already been explained that Sanskrit is a derivative language. Every word itself speaks out its meaning. The word in the B.U. has been explained thus-hri (ह्र) which deaws the blood from all parts of the body (ह्र to dwaw). Da (हरणे) that which gives the blood back after purifying it (दा दाने to give) ya (य) that which thus controls the system.

Maxmuller admitted that "there was a time when all mankind lived under the same roof." But where, he could not identify. Dayananda identified it and declared in 1875 in his magnumopus, the Satyartha Prakash that "Man was first created in Trivishtapa, now called Tibet." The hypothesis of Dayananda has only recently been supported and confirmed by a team of American scientists in a report released by them in Beijing, eapital of China, The report, published in the Baroda edition of the Indian express dated 16th February, 1995, says-

"Scientists have propounded a new theory that human life originated in Tibet. Human life may have formed in Tibet after The planets greatest intercontinental collision. They have come out with a hypothesis that all human life is formed out of the uplift of the Tibetan plateau when the Indian sub-continent crashed into Asia may millions of years ago.

The hypothesis has been propounded by a team of international geologists who went public last week in a B.B.C. documentary shadding new light on climate shifts and solar radiation."

Dayananda's was the seer's eye which could see beyond the horizon and Aurobindo was right when he said that the Veda contains many truths, which modern science does not know. That human life originated in Tibet was not known to the world before February 1995, but Dayananda knew it in 1875 when he wrote the Satyarthaprakash.

The glory that is Veda

In the words of German philosopher Schlegill-"The loftiest European philosophy compared with Oriental realism is like a feeble Promethean spark in the full flood of a heavenly galaxy. Not only this, but their marvelous intellectual genius formed an avenue in drama, poetry, science and medicine."

Alfred Wallace, considered to be a co-discoverer of the famous theory of evolutions, alongwith Charles Darwin, observes in one of his books-

"The wonderful collection of hymns, known as the Vedas, is a vast system of religious teachings, as pure and lofty as those of the finest portions of the Hebrew scriptures. In it we find many of the essential teachings of the most advanced thinkers."

"Back to the Vedas" was the clarion call of Dayanand. What a master glance of practical intuition it was to go back to the very root of Indian life and culture. And what an act of grandiose intellectual courage to hold upon this primeval scripture, defaced by the oblivion of its spirit and degraded by misunderstanding to the level of an ancient document of barbarism.

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज राजेन्द्र नगर की साधारण सभा की वार्षिक बैठक दिनांक 25 मई रविवार को प्रातः 10 बजे साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् प्रारम्भ हुई। समाज के सुयोग्य मन्त्री श्री सतीश मैहता जी ने वार्षिक विवरण पढ़कर सुनाया। सभी सदस्यों ने समाज की निरन्तर बढ़ती प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त की। निर्वाचन अधिकारी श्री भीषम लाल जी ने चुनाव की प्रक्रिया का प्रारम्भ करते हुए प्रधान पद के लिए सदस्यों से नाम भेजने का आग्रह किया सभी सदस्यों ने ध्वनिमत से यशस्वी आर्य नेता श्री अशोक सहगल जी के नाम का अनुमोदन तथा समर्थन किया। अन्त में निर्वाचन अधिकारी ने सर्व सम्मति से सम्पन्न इस चुनाव के लिए सभासदों का धन्यवाद किया तथा प्रधान जी को अपनी नई कार्यकारिणी गठन करने का अधिकार प्रदान किया। वैदिक धर्म की जय के साथ सभा का समापन सम्पन्न हुआ। अन्त में नवनिर्वाचित प्रधान श्री अशोक सहगल जी ने सभी सभासदों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए श्री सुरेश चुघ जी को उपप्रधान, श्री सतीश मैहता जी को मन्त्री, श्री नरेन्द्र वलेचा जी को वरिष्ठ कार्यकारी मन्त्री एवं श्री सतीश जी को कोषाध्यक्ष पद के लिए चयनित किया।

Printed and published by **Sh. S.C. Mehta** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. ***Editor :*** **Dr. Kailash Chandra Shastri**